p; Need to take suitable measures to correct the Olympic record books published in 2008 and 2012 wrongly depicting Norman Pritchard who won two silver medals in 1900 Paris Olympic as British athlete.

श्री राजन विचारे (ठाणे) ः मैं सरकार का ध्यान 1900 के पेरिस ओलम्पिक की तरफ आकर्षित करना चाहता हूँ जिसका संबंध देश के गौरव एवं उसकी प्रतिष्ठा से जुड़ा है जिसमें नॉर्मन प्रिचर्ड नाम के एक युवक ने 200 मीटर की दौड़ एवं 200 मीटर की हर्डल दौड़ प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर 1-1 रजत पदक जीतकर भारत का नाम रोशन किया था। नॉर्मन प्रिचर्ड का जन्म एवं परवरिश भारत में होने के कारण वह एक भारतीय था। अतएव, उसने अपने द्वारा जीते दोनों रजत पदकों को भारत के नाम लिखवाया। जिन उपलब्धियों का उल्लेख भी वर्ष 2004 के पूर्व पकाशित हुए हर एक रिकॉर्ड बुक एवं ओलम्पिक से संबंधित हर एक किताब में लगभग 140 वर्षों तक भारत के नाम पर ही दर्ज था लेकिन दुर्भाग्यवर्ष वर्ष 2004 से एथेन्स ओलम्पिक के दौरान मार्क बटलर नाम के क्रीड़ा विशेषज्ञ ने रिकॉर्ड बुक्स के साथ छेड़-छाड़ कर दोनों रजत पदकों को ब्रिटेन के नाम कर दिया जो भारत के नाम थे जिसके परिणामस्वरूप वर्ष 2008 तथा 2012 में लिखे गए रिकॉर्ड बुक्स में उन दो रजत पदकों का हकदार ब्रिटेन को बताया गया है जो गलत है। यदि समय रहते ही देश के ओलम्पिक संगठन ने इस तरह की हेराफेरी के विरोध स्वरूप अपनी आवाज उठाई होती तो देश का गौरव देश में ही रहता।

अतः मेरा माननीय खेल मंत्री जी से अनुरोध है कि मामले की गंभीरता को समझते हुए इस मामले को उचित अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उठाकर नॉर्मन प्रिचर्ड द्वारा जीते गए अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक संगठन के पदकों को रिकॉर्ड बुक्स में भारत के नाम दर्ज करवाने की पहल की जाए।